5 मई 2025
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532 मासिक जागरण पत्रिका

OPERATION SINDOOR

पहलगाम का बदला पूरा!!

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में धर्म पूछकर आतंकवादियों ने
26 हिन्दुओं का किया नरसंहार,
संपूर्ण देश सहित दुनियाँ ने की कायराना हरकत की निंदा,
प्रधानमंत्री बोले आतंकियों को मिट्टी में मिला देंगे।
हमारी वायु सेना ने मिट्टी में मिला भी दिया।

SHAKTI®
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

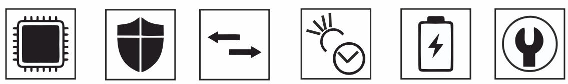

कार्यप्रणाली

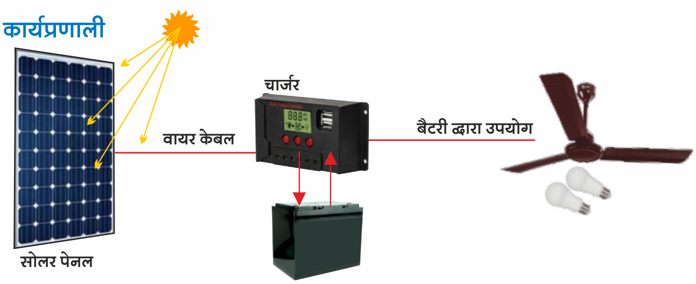

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: 1800 103 5555

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : ०३ अंक : १२

बैशाख शुक्ल ८
युगाब्द ५१२७

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
राकेश दाँगी
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
राजेश सोनी
अशोक वर्मा
योगेश भोपे
सौरभ मारु
अमन व्यास

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341

Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक राकेश दाँगी
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

आतंकवाद मानवता के लिए बहुत बड़ा खतरा है। जब तक आतंकवाद को जड़ से नष्ट नहीं करेंगे तब तक दुनिया में शान्ति लाना असंभव है। पूरी दुनिया इस्लामिक आतंकवाद को खत्म करने के लिए तैयार है। पहलगाम घटना के बाद भारत सहित सभी देश आतंकवाद का पुरजोर विरोध कर रहे हैं। पूरा विश्व भारत के साथ खड़ा है।

पश्चिम बंगाल में वक्फ संशोधन कानून के विरोध के नाम पर जो हिंसा हुई है वह विरोध प्रदर्शन नहीं बल्कि एक सुनियोजित प्रायोजित हिन्दू नरसंहार है।

पहलगाम में धर्म पूछकर हत्या करना यह इस्लामिक आतंकवाद का जीता जागता उदाहरण है। पहलगाम में किसी की जाति नहीं पूछी थी, धर्म पूछा था। वह भी हिन्दू धर्म मानने वालों की निर्मम हत्या की गई अत~ जाति अब पहचान नहीं पहचान हमारी हिन्दू है। इस घटना के बाद हमे जाति से ऊपर होकर सोचना होगा। हम किसी भी जाति के हों, असली पहचान हिन्दू है।

पहलगाम घटना के बाद युद्ध के बादल मडरा रहे हैं। धर्म और अधर्म के बीच इस युद्ध में धर्म की विजय सुनिश्चित है। हम सभी भारतवासियों को इस युद्धकाल में सजग और किसी भी परिस्थिति से निपटने के लिए तैयार रहना है। भारतीय नेतृत्व और हमारी सेना हर खतरे से निपटने के लिए तैयार है। सेना का मनोबल ऊँचा बना रहे इसमें हम सबकी भूमिका अहम है। आतंकवाद को जड़ों से नष्ट करना अब हमारा संकल्प है। पाकिस्तान अब दुनिया के मानचित्र पर नहीं रहेगा। बहुत ही शीघ्र हम सब भारतमाता के अखंड स्वरूप का दर्शन करेंगे। भारत माता की जय

- देवकृष्ण व्यास

पहलगाम हमला

सपना सी.पी. साहू 'स्वप्निल'

जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले के पहलगाम में 22अप्रैल, 2025 को बैसरन घाटी में हुए आतंकी हमले ने पूरे देश को झकझोर दिया। यह घटना सुरक्षा की कमी से बढ़कर, सुरक्षा में घात सी प्रतीत होती है। यह क्षेत्र मिनी स्विट्जरलैंड कहलाता है। इस जगह की सुंदरता निहारने के लिए उस दिन वहां लगभग 2000 पर्यटक पहुंचे थे। वैसे भी धारा 370 हटने के बाद जम्मू-कश्मीर के पर्यटन व्यवसाय में लगभग चार गुना बढ़ोतरी आ गई थी। इसलिए उस सुंदर जगह को निहारने के लिए वहां इतनी बड़ी संख्या में पर्यटक होना आम बात थी। जिसमें से 28 पर्यटकों को आतंकवादियों ने निशाना बनाया और उनकी जान ले ली और 20 से अधिक लोगों पर घातक हमला कर घायल कर दिया।

यह केवल एक जघन्य अपराध ही नहीं था, बल्कि यह सुरक्षा व्यवस्था में सुनियोजित घात का परिणाम था। इस दुःखद घटना में साथ देने वाले स्थानीय व्यक्ति ही रहे। यह हमला, व्यक्तियों से धर्म पूछकर, कलमा पढ़ने का बोलकर, पूर्ण रूप से जांच परखकर किया गया और भारत की बहुसंख्यक आबादी वाले हिंदुओं को चुन-चुनकर निशाना बनाया गया। यह 2008 के मुंबई हमलों के बाद भारत में सबसे घातक आतंकी घटनाओं में से एक है। जिसने देश की एकता को खंडित करने का प्रयास किया है। इस घटना के सभी पहलुओं पर नज़र डालें तो यह ज्ञात होता है कि यह सिर्फ सुरक्षा में कमी का फल नहीं थी, बल्कि एक पूर्ण रूप से महीनों से तैयार, सोची-समझी साजिश थी, जिसमें पाकिस्तानी कौम विशेष के आतंकियों ने सुरक्षा व्यवस्था की कमजोरियों का अच्छे से परीक्षण कर, चूक का फायदा उठाते हुए घात लगाई।

बिंदुवार तथ्यों के आधार पर हमले का स्वरूप और योजना बनाई गई, यह पहलगाम हमले को देखकर ज्ञात होता है। इस आतंकी हमले की जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा के सहयोगी संगठन **द रेजिस्टेंस फ्रंट** (TRF) ने ली। यह पूर्व सुनियोजित प्राणघातक आतंकी हमला था। पीड़ितों के अनुसार, 5 से 6 पाकिस्तानी आतंकवादी कुछ दिन पहले से ही बैसरन के घने जंगलों में छिपे हुए थे। इन आतंकियों ने स्थानीय सहयोग से पूर्व में ही पर्यटकों पर धर्म पूछकर आतंकी हमले की योजना बना रखी थी।

इन लोगों को पहचाना न जा सके इसलिए इन्होंने पहले से इलाके की रेकी कर रखी थी और पर्यटक इन पर संदेह न कर सकें इसलिए सैन्य शैली की वर्दी पहन रखी थी, ताकि पर्यटक समझें कि हमारी सुरक्षा व्यवस्था के लिए पुलिसकर्मी हमारे आस-पास हैं। पाकिस्तानी आतंकी हमलावरों AK-47 और My कार्बाइन जैसे हाईटेक हथियारों का उपयोग किया। पीड़ितों से उनके नाम व धर्म पूछकर, कलमा पढ़वाकर, आधार कार्ड आदि देखकर चुन-चुनकर हिंदू पर्यटकों को निशाना बनाया। इसमें केवल एक मुस्लिम आदिल हुसैन शाह मारा गया, वह भी इसलिए क्योंकि उसके घोड़े पर हिंदू बैठा था और उसने स्वयं के जान-माल की रक्षा करने के लिए आतंकवादी की रिवाल्वर पकड़कर झूमा-झटकी की तो आतंकवादियों ने उसे भी मौत के घाट उतार दिया। यह क्रूर हमला दर्शाता है कि यह एक साम्प्रदायिक, नफरत से भरा और कश्मीर की अर्थव्यवस्था, विशेषकर पर्यटन को नुकसान पहुंचाने के लक्ष्य की पूर्ति के लिए किया गया था।

आतंकियों का रणनीतिक लक्ष्य बैसरन घाटी, जिसे **मिनी स्विट्जरलैंड** के नाम दिया गया है इसलिए रहा क्योंकि यहां फोटोशूट, कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता और वादियों को निहारने पर्यटक अधिक आते हैं। यह पहलगाम से लगभग 6-7 किलोमीटर दूर, एक ऊंचाई पर बना दुर्गम इलाका है, जो आसपास से घने जंगलों और पहाड़ों से घिरा हुआ है। इस इलाके में वाहन नहीं पहुंच सकते। लोग पैदल या खच्चरों से यहां पहुँचते हैं। आतंकवादियों ने इस भौगोलिक स्थिति का फायदा उठाया, क्योंकि उस समय यहां सुरक्षा बलों की तैनाती न के बराबर थी। स्थानीय पुलिस व्यवस्था के न होने से आतंकियों को किसी का डर नहीं था। एक रिपोर्ट के अनुसार 5.5 किलोमीटर के पहलगाम-बैसरन मार्ग पर कोई पुलिस

पिकेट नहीं था, जिससे आतंकियों के लिए वहाँ पर हमला करना आसान हो गया। इसके अतिरिक्त, इस इलाके में मोबाइल नेटवर्क की भी कमी थी और आपातकालीन प्रतिक्रिया में 30-40 मिनट का समय लगना भी आतंकियों की योजना का हिस्सा था। यहां स्पष्टता से पता चलता है कि आतंकियों ने सुरक्षा व्यवस्था की इन्हीं कमजोरियों को पहले से भाँप लिया था और घात लगाकर हमला किया। पीड़ित पर्यटकों ने भी बताया कि घोड़े वाले ज्यादा ऊँचाई पर ले जा रहे थे। होटल से ही रेकी की जा रही थी। आतंकियों की रणनीति बहुत दिनों से बन रही थी, यह सुरक्षा में घात लगाने वाली थी। वह रेकी के द्वारा जान चुके थे कि किन-किन जगहों पर राज्य पुलिस की कोई व्यवस्था नहीं है। तथ्यों के आधार बताते हैं कि यह एक सुनियोजित योजना और घात थी, यह सुरक्षा पर सैंध सुरक्षा कर्मियों की कमजोर कड़ी को दर्शाती है। उमर अब्दुल्ला की राज्य सरकार को ऐसे पिकनिक स्पाट पर राज्य पुलिस के द्वारा सुरक्षा व्यवस्था करनी चाहिए थी। वहां आतंकियों ने पर्यटकों को भ्रम में रखने के लिए सैन्य वर्दी का उपयोग किया। आतंकियों ने सेना या पुलिस की वर्दी पहनकर आम जनता को बताया कि वे सुरक्षाकर्मी हैं। पर्यटक पुलिस की वर्दी पहने आतंकवादियों से इतने डर चुके थे कि जब हमले के बाद, भारतीय सेना के जवान बैसरन घाटी में पहुंचे तो पर्यटकों ने उन्हें भी आतंकी समझ लिया, क्योंकि आतंकियों ने भी ऐसी ही वर्दी पहनी थी। यह रणनीति आतंकियों के लिए बिना संदेह के हमला करने और भागने में सहायक बनी।

आतंकवादियों ने रेकी करकर खुफिया जानकारी इकट्ठी की थी, जिसमें सुरक्षा एजेंसियों के सूत्रों के अनुसार दावा किया गया है कि हमले से पहले स्थानीय नागरिक जो पूर्व से ही आतंकी संगठनों के साथ जुड़े हुए थे, उन्होंने मदद की है। आतंकियों ने इलाके की रेकी में संभवतः स्थानीय नेटवर्क और पाकिस्तान समर्थित आतंकी संगठनों के सहयोग का लाभ उठाया। इस इस्लामिक आक्रांताओं वाली आतंकी घटना में पाकिस्तान की भूमिका को जांच एजेंसियों ने भी स्वीकारा हैं। **इस हमले के पीछे पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी ISI की साजिश थी।** भले ही पाकिस्तान के रक्षामंत्री ने हमले से पल्ला झाड़ लिया हो, लेकिन पकड़े गए लोगों ने दो पाकिस्तानी आतंकियों की सीधी भूमिका की पुष्टि की है। हम नकार तो नहीं सकते कि राज्य पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था की कमजोरियां रहीं। जिसके लिए उमर अब्दुल्ला की पुलिस को मुस्तैद रहना था हालांकि यह हमला सुरक्षा में घात का परिणाम था। वहां कमजोरियां भी सामने आई। स्थानीय लोग भी संदिग्ध पाए गए हैं, वैसें तो अमरनाथ यात्रा के आयोजनों में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था होती है, लेकिन इस बार बैसरन जैसे क्षेत्रों में सुरक्षा ढीली थी।

हमले के बाद सरकार और सुरक्षा बलों की प्रतिक्रिया त्वरित कार्रवाई की रही। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सऊदी अरब से और गृह मंत्री अमित शाह ने वहां पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया और कड़े कदम उठाने के निर्देश भी दिए। अमित शाह ने श्रीनगर पहुंचकर उच्च स्तरीय बैठक की और बैसरन का दौरा किया। भारतीय सेना, CRPF और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने व्यापक तलाशी अभियान शुरू किया है। बारामूला में दो आतंकी मारे भी गए हैं। जो स्थानीय इस्लामी आतंकवादी साथ में थे उनके घरों को भी उड़ाया गया है। लेकिन अभी कठोर सबक सिखाना बाकी है। जिसका आश्वासन मोदी जी, योगी जी, अमित शाह जी सहित पूरी एनडीए सरकार ने दिया है। पीड़ितों के दुख और आंसू भुलाए नहीं जा सकते पर यथासंभव मुआवजा दिया गया है।

इसके अतिरिक्त सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति (CCS) की बैठक में पांच बड़े फैसले लिए गए, जिनमें सिंधु जल संधि को निलंबित करना, 48 घंटे में पाकिस्तानी नागरिकों को देश छोड़ने का अल्टीमेटम देना, पाकिस्तान से राजनैतिक संबंध समाप्त करना, अटारी-वाघा सीमा पर चेकपोस्ट बंद करना और पाकिस्तानी दूतावास के सैन्य सलाहकारों को निष्कासित करना शामिल है। यह सभी कदम दर्शाते हैं कि भारत इस हमले को केवल एक आतंकी घटना नहीं, बल्कि पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ एक युद्ध के रूप में देख रहा है। पहलगाम का आतंकवादी हमला सुरक्षा में कमी से कहीं अधिक एक सुनियोजित घात का परिणाम ही था। पाकिस्तानी आतंकवादी संग कुछ स्थानीय लोगों ने बैसरन की भौगोलिक स्थिति, सैन्य वर्दी का उपयोग कर और सुरक्षा बलों की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर हिंदुओं के क्रुर नरसंहार को अंजाम दिया। हालांकि, भारत में कुछ क्षेत्रों में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने की आवश्यकता है। लेकिन इस हमले को केवल खुफिया या सुरक्षा विफलता के रूप में देखना भी सही नहीं होगा। यह पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद की एक सुनियोजित साजिश थी। जिसका मकसद कश्मीर में अशांति फैलाना और पर्यटन को नष्ट करना भी था। यूं तो अब पाकिस्तान ने खुद की भूमिका न होने की बात कही है। फिर भी सब जानते हैं कि पाकिस्तान का हाथ तो कड़ी प्रतिक्रिया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राज्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, रूस, जर्मनी, फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम ने साथ देने की बात की है। वहीं चीन ने दोनों पक्षों को आपसी सहमति बनाने की बात रखी है। भारत में पक्ष-विपक्ष ने एकजुटता से स्पष्ट किया है कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में देश एकजुट है और इस बार आतंकवाद को समूल नष्ट किया जाएगा।

पहलगाम त्रासदी...
महिलाओं के प्रति असामान्य नरमी का सत्य

राजेश्वरी भट्ट, ब्रह्मपुर

संतूर, फेरन, क़हवा, चिनार और शिकारा इन लफ़्ज़ों से उभरा है सदा ज़ेहन में कश्मीर!

कभी यह सब कश्मीर की विशेषता हुआ करती थी परंतु आज यह पहचान खो चुकी है, अब कश्मीर आतंक और हिन्दुओं के नरसंहार के लिए जाना जाने लगा है। पहली बार नहीं है जब कश्मीर लहूलुहान हुआ है, विगत पैंतीस से अधिक वर्षों से कश्मीर की घाटी बम धमाकों और गोलियों के शोर से गूंज रही है। भारत का दुर्भाग्य ही है जो इसे शांतिप्रिय होने का मूल्य चुकाना पड़ता है। आज से नहीं पिछले हज़ार वर्षों से, हम निरंतर युद्ध में हैं, जो हमारा चुनाव नहीं था, हम पर थोपा जाता है। कश्मीरी हिंदू पंडितों का नरसंहार एक - एक भारतीय की आत्मा को भेद गया था। उसके बाद भी निरंतर इस्लामिक आतंकवादियों द्वारा, अमरनाथ यात्रा, अनंतनाग, पुलवामा जैसे हमलों को अंजाम दिया जाता रहा है और उसी क्रम में अब निशाना बनाया गया पहलगाम को। अनुच्छेद 370 हटने के बाद इन इस्लामिक आतंकी संगठनों की बौखलाहट और बढ़ गई है, जिससे वे अपनी विफलता का बदला आम जनता से लेना चाहते हैं। पहलगाम त्रासदी इस बात का प्रतीक है कि किस तरह इस्लामी आतंकवादी धर्म के नाम पर निर्दोषों को निशाना बनाते हैं। वे यह जानते हैं कि जमीनी स्तर पर भारत को हराना संभव नहीं इसलिए अब आतंकियों का मुेय उद्देश्य धार्मिक असहिष्णुता फैलाना, कश्मीर को अस्थिर करना और भारत की एकता को चुनौती देना है।

इतिहास साक्षी रहा है कि जब भी भारत पर मुगल या इस्लामिक आक्रमण हुआ है आक्रमणकारियों ने सर्वप्रथम महिलाओं और बालकों पर अत्याचार किए हैं, उनकी हत्या की और महिलाओं की अस्मिता लूटी है। परंतु इस बार पहलगाम में आतंकियों ने महिलाओं और बालकों पर हमला न करके उन्हें जीवित छोड़ दिया। ऐसा करना उनकी कोई सहृदयता या मानवीयता का भाग नहीं था। दानवों से देवों के आचरण की अपेक्षा मूर्खता है यह भी उनकी विकृत और घृणित मानसिकता का एक उदाहरण था जिसमें वह बालकों और महिलाओं को जीवन भर असहनीय पीड़ा से भर देना चाहते थे।

उन्होंने घर के मुखिया को निशाना बनाया। वो चाहते तो पति-पत्नी, एक पूरा परिवार या साथ घूमने आए पूरे समूह को भी निशाना बना सकते थे परंतु उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया एक सोची-समझी रणनीति के साथ महिलाओं और बालकों की आँखों के सामने उनके पति और पिता को बर्बरता से मार दिया गया और उन्हें जीवित छोड़ दिया गया जीवन भर के दुख और सदमे को सहने के लिए। ताकि उनकी आने वाली पीढ़ियां भी इस घटना को स्मरण कर कश्मीर को अपने लिए नर्क समझें जिसे वह स्वर्ग समझते आए थे। पहलगाम आतंकी हमले में महिलाओं और बालकों को जीवित छोड़े जाने के पीछे आतंकियों की घृणित मानसिकता या उद्देश्य के कई कारण हो सकते हैं, जो मुझे संभावित कारण लगते हैं वो ये हैं कि.. समाज में भय व्याप्त करना..कई बार आतंकी संगठन यह दिखाने के लिए कुछ लोगों को जीवित छोड़ते हैं ताकि वे बाकी समाज में भय और असुरक्षा का माहौल फैला सकें।

देश और समाज में भय के प्रचार के लिए - आतंकवादी संगठनों द्वारा महिलाओं को इसलिए जीवित छोड़ दिया गया ताकि उन पर किए गए अत्याचारों से वे अन्य लोगों को अवगत कराएं और उससे प्रचारित होने वाला भय भविष्य में उनके इरादों को सफल कर सके। सोची समझी रणनीति हो सकता है कि हमला विशिष्ट लक्ष्यों पर केंद्रित था और महिलाओं को निशाना नहीं बनाना उनके **कोड** या आदेश का हिस्सा हो। आतंकियों की चाहे जो रणनीति रही हो, जो पीड़ित हैं, जो उस आतंकी विभीषिका को झेल, अपनों को खोकर, नेत्रों में अश्रुरू, हृदय में मौन चीखें और भयभीत मन लेकर आए हैं उनके दुख में सहभागी होकर उन पर विश्वास करना मानव होने की प्रथम शर्त है। संवेदना की पहली सीढ़ी, मानवता की बात करते हुए जब आप उस पीड़ित की बात को झुठला कर उसकी पीड़ा और बढ़ाते हैं और अपने आपको संवेदनशील बताने का कुत्सित प्रयास करते हैं तब न तो आपकी मंशा छिपती है न नीयत। पहलगाम त्रासदी हमें यह याद दिलाती है कि आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होकर खड़ा होना समय की मांग है, और हर निर्दोष जीवन की रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है।

हमले में स्थानीय लोगों की भूमिका

जांच एजेंसियों को संदेह है कि पर्यटकों की रेकी होटल से ही प्रारंभ हो गई थी, क्योंकि होटल में मौजूद कई लोग इन पर्यटकों से पूछताछ करने में लगे थे। ऐसा ही संदेह स्वयं पर्यटकों ने भी जताया है। शुभम के परिजनों ने यह भी बताया कि जब आतंकवादी लोगों को गोली मार रहे थे और सभी लोग सहायता के लिए इधर-उधर दौड़ते हुए चिल्ला रहे थे, उस स्थान पर मौजूद तीन पुलिसकर्मी यह सब देखते रहे। उन्होंने किसी भी तरीके से किसी भी प्रकार की मदद करने की कोशिश नहीं की। वे लोग ऐसे व्यवहार कर रहे थे, जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो। हमले में मारे गए कानपुर के शुभम द्विवेदी के परिजनों ने भी इस बात का संदेह जताया है कि स्थानीय दुकानदार और वेंडर, आतंकवादियों से मिले हुए थे। उन्होंने घोड़ेवालों पर भी संदेह जताते हुए बताया कि जब सैलानियों को टट्टू पर बिठाकर स्थानीय लोग ऊपर पहाड़ी पर ले जा रहे थे, तब शुभम और उनकी पत्नी आयशा ने उनसे बार-बार कहा कि अब उन्हें ऊपर तक नहीं जाना है, काफी थकान हो रही है। तब भी टट्टू चालकों ने उनकी बात नहीं सुनी और कहने लगे कि ऊपर तक तो जाना ही पड़ेगा।

सुशील नथानियेल की पत्नी ने बताया कि घटना से पहले उन्हें अजीब-सा एहसास हो रहा था, क्योंकि लोकल वेंडर, पर्यटकों से दूरी बनाए हुए थे। इससे साफ है कि स्थानीय लोगों को पता था कि अभी कुछ होने वाला है साथ ही यह भी स्पष्ट हो जाता है कि इस घटना में स्थानीय सहायता भी आतंकवादियों को मिल रही थी ।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि आतंकवादियों ने हत्या करने के बाद लाशों के साथ सेल्फी भी ली।

आपबीती -1

पुणे के व्यवसायी संतोष जगदाले की बेटी असावरी इस भयानक घटना को याद करते हुए कहती हैं कि जब गोलीबारी शुरू हुई, तब बैसरन घाटी में हम पांच लोग थे, जिनमें मेरे माता-पिता भी शामिल थे। अचानक मेरे पास के तंबू में अंधाधुंध गोलियां बरसने लगीं। पूरा परिवार डर के मारे तंबू के अंदर छुप गया। आतंकवादी सेना की वर्दी में थे। गोलीबारी की आवाज सुनकर अन्य पर्यटक भी अपने-अपने हिसाब से छुपने का प्रयास कर रहे थे। कई गोलीबारी से बचने के लिए जमीन पर लेट गए। अभी तक लोगों को यही लग रहा था कि आतंकवादियों और सुरक्षाकर्मियों के बीच गोलीबारी हो रही है। तभी आतंकवादियों ने असावरी के पिता को बाहर बुलाया और कलमा पढ़ने को कहा। असावरी बताती हैं कि पापा ऐसा नहीं कर सके, तो आतंकवादियों ने उन्हें तीन गोली, एक सिर में, एक कान के पीछे और एक पीठ में मारी। मेरे पापा वहीं गिर गए, उनके सर से खून की धार बह रही थी, आतंकी यहीं नहीं रुके, उन्होंने बगल में लेटे हुए चाचा पर भी हमला किया और उनकी पीठ में भी कई गोलियां मारी। इसके बाद जो भी सामने दिखा आतंकवादियों ने उन्हें गोली मार दी। आतंकवादी कह रहे थे कि तुम लोगों ने मोदी को सिर पर चढ़ा रखा है, उसकी वजह से हमारा मजहब खतरे में है।

जागो फिर एक बार

सदियां बीत गईं
जुल्म सहते-सहते
इतिहास वही क्या फिर
दोहराओगे?
आने वाली पीढ़ी को तुम
कैसा भारत दे जाओगे?
हरित धरा पर रक्तरंजित
देहों पर
कब तक आंसू तुम बहाओगे?
वादियों में गूँजती दर्दनाक
चीखों पर
कब तक तुम शोक मनाओगे?
टुकड़े-टुकड़े में बँट कर आए
बेटों की माँओं को कब तक
तुम समझाओगे?
पत्थर बन गए जिन के कलेजे
उन बहनों के सर कब तक
सहलाओगे?
मेहँदी छूटी नहीं जिन हाथों की
उनकी आँखों से बहती नदियों
पर
कब तक बाँध बनाओगे?
जिसने देखी नहीं थी दुनिया
लेकिन
देख लिया मौत का मंजर
उसे मासूम को कौन
सा खिलौना देकर तुम
बहलाओगे?
भूल गए क्या तुम हो महाराणा
के वंशज
भूल गए क्या वीर शिवा तुम्हारे
अग्रज
भूल गए क्या गुरु गोविंदसिंह
की सिंह दहाड़
भूल गए क्या अस्सी घाव
खाकर भी राणा करता रहा
प्रहार
शांति का राग अलापने वालो
भाईचारे की बीन बजाने वालो
इन सपोलों के द्वारा
चुन-चुन कर तुम डस लिए
जाओगे
अब भी ना चेते तो
सदा के लिए मिट जाओगे
सदियां बीत गईं
जुल्म सहते-सहते
इतिहास वही क्या
फिर दोहराओगे?
आने वाली पीढ़ी को तुम
कैसा भारत दे जाओगे?

- अनिता जोशी

भारत रक्षात्मक नहीं, प्रभावी प्रतिरोधात्मक रणनीति अपनाए

अमित राव पवार, देवास

भारत, जहाँ पश्चिम बंगाल सांप्रदायिक दंगों की आग में झुलस रहा था, उसी दौरान 22 अप्रैल 2025, मंगलवार को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुआ आतंकवादी हमला एक और दर्दनाक अध्याय बन गया। यह हमला किसी राज्य, भाषा या जाति पर नहीं, बल्कि सीधे धर्म के नाम पर किया गया हमला था। आतंकवादियों ने पर्यटकों से उनके नाम पूछे और हिंदू नाम सुनते ही उन्हें गोली मार दी।

इन मासूमों का अपराध क्या था? केवल यही कि वे हिंदू थे? इस प्रकार की मानसिकता केवल हमारे वर्तमान की नहीं, इतिहास की भी एक गूँज है। जंजीरा के लोग जब हिंदू बस्तियों को उजाड़ते थे, तब छत्रपति शिवाजी महाराज ने उन पर प्रहार कर बस्तियों को पुनः रोशन किया था। आज फिर वही समय लौट आया है–हमें आतंक की जड़ों तक जाना होगा। विश्व में कोई भी आतंकवादी न स्वयं चैन से रहता है, न ही किसी और को जीने देता है। क्या हम बार-बार इसी तरह पीड़ित होते रहेंगे? सिर्फ आतंकियों को पकड़ लेने से क्या आतंकवाद समाप्त हो जाएगा? क्या सैलानी, पर्यटक भविष्य में निश्चिंत होकर कश्मीर या देश के किसी भी पर्यटन स्थल पर घूम सकेंगे?

हमें अब केवल टहनियाँ नहीं, जड़ें काटनी होंगी। चार-दस या सौ आतंकवादी केवल मोहरे हैं। मजहब, लालच और कट्टरता के नाम पर इन्हें उकसाया जाता है। अब वक्त है कि सीधे आतंक की जड़ पर प्रहार हो–विचारधारा की, प्रशिक्षण केंद्रों की, फंडिंग स्रोतों की और वैचारिक पोषण की।

इस दुःखद क्षण में एक संतोषजनक पहल यह रही कि घटना के तुरंत बाद देश के गृहमंत्री स्वयं घटनास्थल पर पहुँचे। यह पहली बार हुआ जब इतनी त्वरित प्रतिक्रिया केंद्र सरकार द्वारा देखने को मिली। यह दर्शाता है कि सरकार और एजेंसियाँ सजग हैं, लेकिन सवाल अब भी कायम है–क्या आगे निर्दोषों की जान बख्शी जाएगी? हमने पूर्व में 26/11, संसद हमला, अमरनाथ यात्रा पर हमला और अनेक बार आतंक का घिनौना चेहरा देखा है। लेकिन अब वक्त है, जब भारत केवल रक्षात्मक नहीं, बल्कि प्रभावी प्रतिरोधात्मक रणनीति अपनाए।

क्या करना चाहिए?

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मजहबी आतंकवाद के विरुद्ध भारत को नेतृत्वकारी भूमिका निभानी चाहिए। घृणा और हिंसा फैलाने वाले मदरसों, ऑनलाइन नेटवर्क और फंडिंग चैनलों पर कठोर कार्यवाही की जानी चाहिए। आतंकवाद को वैचारिक समर्थन देने वाले नेताओं और संगठनों की शिनाख्त कर उन्हें निष्कासित करना चाहिए। भारत की सुरक्षा नीति में **रिएक्टिव** नहीं **प्रो-एक्टिव** दृष्टिकोण अपनाना होगा।

शास्त्र कहता है– **शठं प्रति शाठ्यम्** – जो शठता से न माने, उसे उसकी ही भाषा में समझाना उचित है।

अब भारत को भी यही करना होगा–जब तक आतंक की जड़ें जिंदा हैं, तब तक हर पेड़, हर शाखा, हर पत्ता संदिग्ध है। यह हमला केवल पहलगाम में नहीं हुआ है, यह हमला भारत की आत्मा पर हुआ है। और अब भारत को उत्तर देना होगा– शब्दों से नहीं, संकल्प से।

पहलगाम की वो आखिरी यात्रा

अरुंधती सिंह चंदेल

22 अप्रैल 2025 की सुबह पहलगाम में बेहद सुहानी थी। देवदारों की हलचल, बर्फ से ढके पहाड़ और ताजगी से भरी हवा – यह दृश्य किसी स्वर्ग से कम नहीं था। दिल्ली, राजस्थान और उत्तर प्रदेश से आए कुछ हिंदू परिवार, वर्षों से सुनी इन वादियों की शांति को महसूस करने आए थे। एक नवविवाहित जोड़ा पहली बार बर्फ देखने आया था, एक बुजुर्ग दंपती अपने विवाह की सालगिरह मनाने निकले थे और कुछ छोटे बच्चे, जिनकी आँखों में उत्सुकता और उत्साह साफ झलक रहा था। बस धीरे-धीरे पहलगाम के भीतर की ओर बढ़ रही थी। सभी यात्री सुंदर नज़ारों में खोए हुए थे। हँसी, गीत, और मोबाइल कैमरों की क्लिक – हर चेहरा मुस्कान से भरा था। लेकिन कोई नहीं जानता था कि कुछ ही क्षणों में यह मुस्कान चीखों में बदल जाएगी।

एक सुनसान मोड़ पर अचानक कुछ हथियारबंद नकाबपोश बस के सामने आ खड़े हुए। बस रुक गई। उनमें से एक ने चीख कर कहा – **सब अपने धर्म बताओ!**

एक पल को सब शांत हो गए। कोई कुछ नहीं बोला। लेकिन बंदूक की नोक के सामने सच छुपाना कठिन था।

कुछ ने डरते-डरते कहा – **हम हिंदू हैं...**

बस इतना ही सुनना था कि दूसरा आतंकी चिल्लाया –

काफिरों को खत्म करो!

और फिर शुरू हुई गोलियों की बौछार।

चीखें, खून, और भगदड़। एक माँ अपने बच्चे की ढाल बनकर उसे सीने से लगाए बैठी थी, पर गोलियों को उसका ममत्व नहीं रोक सका। एक नवविवाहित पति अपनी पत्नी को बचाने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन गोली उसके सीने को चीरती हुई निकल गई। पहलगाम, जहाँ ऋषियों ने तप किया था, आज मासूमों के खून से लाल हो चुका था।

एक इतिहास जो फिर दोहराया गया - यह हमला अचानक नहीं हुआ था। यह एक सुनियोजित साजिश थी। पिछले कुछ दशकों से कश्मीर में हिंदुओं को निशाना बनाया जा रहा है – 1990 का कश्मीरी पंडितों का नरसंहार इसका पहला प्रमाण था। और आज, 2025 में फिर से वही इतिहास दोहराया जा रहा है।

आतंकवादी संगठन TRF – जो लश्कर-ए-तैय्यबा की शाखा है – इस हमले की जिम्मेदारी लेता है। लेकिन यह केवल एक राजनीतिक संगठन नहीं, एक मजहबी उन्माद से भरा हुआ समूह है। इनकी सोच है कि कश्मीर को **हिंदू-मुक्त** करना चाहिए।

यह हमले सिर्फ हिंसा नहीं – एक मानसिक, सांस्कृतिक और धार्मिक युद्ध हैं। इन आतंकियों के लिए हिंदू होना, काफिर होना है। और काफिर को उनकी विचारधारा जीने का हक नहीं देती। सबसे दुःखद बात यह है कि जब दुनिया के किसी कोने में एक मुसलमान पर हमला होता है, तो पूरा वैश्विक समुदाय खड़ा हो जाता है। लेकिन जब कश्मीर में हिंदुओं पर मजहबी हमला होता है – तब वही दुनिया खामोश हो जाती है। भारत के अंदर भी कुछ बुद्धिजीवी

और तथाकथित सेक्युलर तत्व इन घटनाओं को **आतंकवाद** नहीं, **मिलिटेंसी** कहकर धार्मिक एंगल से बचने की कोशिश करते हैं।

अब समय है लौटने का – डर को हराने का - पहलगाम का यह हमला केवल उन लोगों पर नहीं हुआ जो बस में बैठे थे। यह हमला हर उस भारतीय पर है जो कश्मीर को अपनी संस्कृति का हिस्सा मानता है। यह हमला उस विचार पर है कि भारत सभी धर्मों के लिए है, और यह हमला उस आत्मा पर है जो कश्मीर को 'पितृभूमि' और 'पुण्यभूमि' दोनों मानती है। हमें अब केवल श्रद्धांजलि देने से आगे बढ़कर पुनः निर्माण करना होगा। हमें वहाँ मंदिरों की घंटियाँ फिर से बजानी होंगी, घाटियों में ऋषियों की परंपरा फिर जीवित करनी होगी, और हिंदुओं को यह विश्वास दिलाना होगा कि वे अब अकेले नहीं हैं। कश्मीर को फिर से उसका प्राचीन गौरव लौटाना होगा – न केवल भूगोल में, बल्कि आत्मा में। हमें वीर सावरकर के शब्दों को आत्मसात् करना होगा – **हिंदू का रक्त, भारत का रक्त है।**

यह लड़ाई अब सिर्फ सुरक्षा की नहीं, सभ्यता की लड़ाई है।

हमें डराकर नहीं भगाया जा सकता। पहलगाम, गुलमर्ग, श्रीनगर – ये सभी हमारी सभ्यता की शिराओं में बहते हैं।

आपबीती - 2

बंगाल से आए बीटन अधिकारी की पत्नी सोहनी ने बताया कि उनका बेटा अचानक चीखने लगा। **मम्मा फायर।** वह गोली चलने की आवाज से डर गया था। तभी उनके पति बीटन अधिकारी ने उनका हाथ पकड़ा और दौड़ने लगे, पीछे मुड़कर देखा तो एक आदमी गोलियां चला रहा था। उनकी गोली बीटन को भी लगी और वे गिर गए। कई लोग गिर पड़े थे, कुछ जान बचाने के लिए झुक गए थे। हमने कभी सोचा नहीं था कि वहां आतंकी हमला हो सकता है। हमलावर पर्यटकों से धर्म पूछ रहे थे, उन्होंने फिर पूछा कोई हिंदू है यहां, फिर गोली चलाई। फिर उन्होंने पूछा कि कलमा पढ़ना आता है ? जवाब नहीं मिलने पर फिर गोली मार दी । सोहनी ने बताया कि मृतकों की लाशों पर भी आतंकवादियों ने दोबारा गोलियां चलाई, ताकि उनमें से किसी के भी जिंदा बचने की संभावना न रहे।

ठीक उसी समय वहां सेना के एक जवान प्रसन्न कुमार भट्ट भी मौजूद थे। जब गोलियां चलने लगीं तो उन्होंने स्थिति को भांप लिया और तत्काल निर्णय लेते हुए अपने साथ आस-पास के 30- 40 लोगों को एक सुरक्षित रास्ते से बाहर करने का प्रयास किया और इस प्रकार से उन सब के प्राण बच गए।

आपबीती - 3

कर्नाटक से आए पर्यटक मंजूनाथ और उनकी पत्नी पल्लवी की कहानी बड़ी मार्मिक है। इस हमले के ठीक एक दिन पहले ही इस दंपति ने बड़े उत्साह के साथ अपनी इस सुंदर यात्रा का वीडियो बनाया था। लेकिन दूसरे दिन, जब वह बैसरन घाटी में आनंद ले रहे थे, तभी आतंकवादी उनके सामने जा खड़े हुए। उन्होंने मंजूनाथ से पूछा कि तुम हिंदू हो या मुसलमान ? जब उन्होंने स्वयं को हिंदू बताया तो बिना किसी विचार किए मंजूनाथ को गोलियों से छलनी कर दिया। इस अनायास हमले से बदहवास पल्लवी ने आतंकवादियों से मौत की भीख मांगी और उनसे कहा कि तुमने मेरे पति को तो मार ही दिया है, अब मुझे भी मार दो। ठीक ऐसा ही उनके बेटे ने भी कहा कि तुमने मेरे पिताजी को मार दिया है, अब हम दोनों को मार दो। इस पर हमलावर ने कहा कि **हम तुम्हें नहीं मारेंगे, जाकर मोदी को यह बता दो।**

आपबीती - 4

केरल के स्वयंसेवक रामचंद्रन भी आतंकियों के द्वारा मारे गए। कोच्चि (इडापल्ली) के रामचंद्रन की हत्या उनकी बेटी के सामने की गई। जब आतंकी हमला हुआ, तब श्री रामचंद्रन की पत्नी तबीयत ठीक नहीं होने की वजह से कार में बैठी हुई थी और रामचंद्रन अपनी बेटी के साथ घाटी में टहल रहे थे। श्री रामचंद्रन कोच्चि की इडापल्ली शाखा के पूर्व मुख्य शिक्षक थे। आतंकियों ने उनका धर्म जानने के लिए पहले उनका नाम पूछा, फिर कलमा पढ़ने को कहा, उनकी पहचान जानने के लिए उनसे कपड़े भी उतरवाए गए और जब उन्होंने सुनिश्चित कर लिया कि वे हिंदू हैं, तो उन्हें गोली मार दी गई।

विश्वास

श्री सत्यनारायण 'सत्तन'

अंधकार को चीरो, लाओ नई भोर।
ज्योति की दुल्हनियाँ को पहिनाओ मौर।
कंठ-कंठ में जय ध्वनि, गौरव गान
अपनी चेतनता जागी सीना तान
सतत बढ़ रहे दुश्मन, यह रखना है ध्यान
नयनों पर पड़ा हुआ परदा अनजान
सीमा पर पल प्रतिपल, बढ़ता है शोर
अंधकार को चीरो, लाओ नई भोर।

नई-नई किरणें हैं, नव-नव आलोक
जीवन विश्वास सुदृढ़ फिर कैसा शोक
तौलनी पड़ेगी हमको अपनी शक्ति
दिखलानी होगी अब पुन: देशभक्ति
मौसम ने पुन: दिया हमको झकझोर
अंधकार को चीरो, लाओ नई भोर।

राजघाट के पत्थर देते सन्देश
अमन चाहते हो तो एक करो देश
शांति के पुजारी हो त्यागो ये ऐश
जाति-पाँति मज़हब से ऊँचा है देश
सिंहों के दाँत यहाँ गिनते किशोर
अंधकार को चीरो, लाओ नई भोर।

नजरा ना जाएं ये लहराते गाँव
रुक न जाएं निर्माणों के बढ़ते पाँव
सीमा का प्रहरी औ' खेत का किसान
एक साथ बोल उठें जय हिंदुस्तान
कोकिल, दादुर गायें, नाच उठे मोर
अंधकार को चीरो, लाओ नई भोर।

आतंकवाद का समग्र प्रभाव

श्रीरंग वासुदेव पेंढारकर

आतंकवाद के संबंध में जब भी चर्चा होती है तो इसके हिंसात्मक पक्ष पर ही ज्यादा बातचीत होती है। हाथों में बंदूक लिए आतंकियों के चित्र, उनके द्वारा किए गए विस्फोट, रक्त रंजित लाशें, रोते-बिलखते सगे संबंधी, सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ आदि विषय चर्चा के केंद्र में रहते हैं और इसी प्रकार के चित्र हमारे मन-मस्तिष्क में गहरे उतर चुके हैं। निश्चय ही, हिंसा आतंकवाद का सबसे घातक हथियार है और इसके परिणाम अत्यन्त हृदय द्रावक होते हैं।

परन्तु इसके साथ ही आतंकी वारदातें समाज, देश और विश्व के आर्थिक तन्त्र को भी बुरी तरह तहस-नहस कर देती हैं। इस पक्ष पर चर्चा कम ही होती है। आतंकवाद की वजह से आर्थिक तन्त्र पर बोझ बढ़ता है और पूरी मानवीयता को इस बोझ की कीमत चुकानी पड़ती है।

उदाहरण के लिए हवाई अड्डों के सुरक्षा उपायों को लीजिए। 24 घण्टे प्रत्येक हवाई अड्डे पर सतत चौकसी रखी जाती है। एक-एक हवाई अड्डा सैकड़ों एकड़ में फैला होता है। इस पूरे क्षेत्र की बाउंड्री बनाना और उसकी सतत चौकसी करना! हवाई पट्टी और खुले पड़े क्षेत्र की चौकसी। आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की जांच, उसके प्रत्येक सामान की जांच, एक्स रे जांच, पूरे परिसर में CCTV की स्थापना, जासूसी कुत्तों द्वारा सतत गश्त! स्पष्ट है कि हवाई अड्डों की सुरक्षा पर सरकारों को हजारों करोड़ प्रतिवर्ष व्यय करने पड़ते हैं। और यह सब इसलिए कि कोई एक सिरफिरा जेहादी किसी जहाज में घुस कर उसे उड़ा न दे! आतंकवाद के अर्थ तन्त्र पर प्रभाव का यह मात्र एक आयाम है। इसके अतिरिक्त आतंक प्रभावित क्षेत्रों में सुरक्षा बलों की तैनाती से लेकर रोज़मर्रा के व्यापार तक, आतंक का प्रभाव अर्थ तन्त्र को आघात पर आघात पहुंचाता रहता है।

अभी इस सप्ताह पहलगांव में हुई घटना के पश्चात प्रभाव के रूप में हजारों पर्यटकों ने अपनी कश्मीर यात्रा रद्द कर दी। आज वहां होटलें वीरान हो चुकी हैं, सड़कें खाली हैं, वर्ष के व्यस्ततम महीने में हवाई जहाज और ट्रेनें यात्री विहीन हो चुके हैं। स्थानीय टैक्सी वाले, खच्चर वाले, खोमचे वाले सभी रातों रात बेरोजगार हो चुके हैं। भारत सरकार ने गत कुछ वर्षों में शान्ति स्थापित कर एक स्वस्थ और शान्त माहौल बनाया था जिसकी वजह से कश्मीर में भारी निवेश आने लगा था। संयुक्त अरब अमीरात के सहयोग से विशाल मॉल बन रहे थे, फिल्मों की शूटिंग होने लगी थी, थियेटर चलने लगे थे। ये सभी गतिविधियां रोजगार उत्पन्न करती हैं। रोजगार की उपलब्धता समाज को संपन्नता की ओर ले जाती हैं। संपन्नता आर्थिक तन्त्र को और अधिक मजबूत और गतिमान बनाती है।

परन्तु, चन्द जिहादी मानसिकता से ग्रसित लफंगों ने पन्द्रह मिनट में सब कुछ तहस-नहस करके रख दिया है। अब पूर्व स्थिति में लौटने के लिए सरकार को पुनः वर्षों तक काम करना होगा और हजारों करोड़ व्यय करने होंगे। विध्वंस करने में समय और ऊर्जा, निर्माण करने की तुलना में 10 प्रतिशत ही लगती है। परन्तु इसके परिणाम अत्यन्त विनाशकारी होते हैं।

यह आतंकवाद कई देशों में सक्रिय है। वारदातें होती रहती हैं। प्रत्येक वारदात मानवीय विकास को बाधित करती है और उन्नति की गति को मंथर करती है। आतंकवाद एक ऐसी विकराल समस्या है जो मानवीय समाज को तन, मन और धन तीनों से तोड़ कर रख देती है। प्रत्येक स्तर पर इसका विरोध और इसे समूल रूप से नष्ट करने के लिए सभी उपाय किए जाने की आवश्यकता है। आतंकवाद का खात्मा सभी देशों की प्राथमिकता सूची में शीर्ष पर होने की आवश्यकता है।

हमारी बातचीत

प्रिय पाठकों ,

अगले माह से आपकी अपनी पत्रिका जागृत मालवा में एक नया स्तम्भ हमारी बातचीत प्रकाशित होगा। इस स्तम्भ में आपके सुझाव और मन की बात प्रकाशित करेंगे। आप अपने सुझाव, मालवा-निमाड़ से जुड़ी बातें और समसामयिक विषयों पर अपनी बात व्हाट्सएप, ई-मेल या पत्र के माध्यम से भेज सकते है। आप पत्रिका के लिए सुझाव और अपने मौलिक विचार भी लिख कर भेज सकते हैं, जिनकी सहायता से हम जागृत मालवा को और अधिक अपनी बना सकेंगे।

आपके चयनित पत्रों को हम इस स्तम्भ में प्रकाशित भी करेंगे।

व्हाट्सएप - ९९७७७१२५६१
ईमेल - jagrutmalwa@gmail.com
पता -विश्व संवाद केन्द्र, अर्चना, 76 रामबाग, इन्दौर

असुरों का आक्रमण स्वर्ग पर

वैदेही कोठारी

पिछले दो-तीन हफ्तों से आतंकवादियों ने देश पर कहर बरसा रखा है। दो हफ्ते पहले पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में फिर पहलगाम में। आज से नहीं सदियों से सभ्य समाज पर आतंकवादी प्रहार कर रहे हैं, कभी औरंगजेब के रूप में, तो कभी अंग्रेजों की हुकूमत ने मानसिक एवं शारीरिक रूप में हर तरह से प्रताड़ित और जलील किया है।

जब-जब हमारे भारत देश ने विकास की रफ्तार पकड़ी तब-तब सर्प रूपी आतंकवादियों ने अपना फन फैला कर देश में आतंक का जहर फैलाया है। विशेषतः पहलगाम में दिल दहला देने वाली घटना खुले रूप से धर्म के नाम पर हुई है, जिसे भुला पाना असंभव है। छब्बीस, सत्ताइस पर्यटकों को दिनदहाड़े गोली मारकर आतंकवादी कहाँ गायब हो गए? अभी तक क्यों नहीं पकड़ाए गए? क्या बगैर आंतरिक मदद के यह संभव है?

टी आर एफ (द रेजिस्टेंस फ्रंट) यह संघटन लश्कर ए तैयबा का ही proxy संगठन है। इन्हीं के पाले गए हाईब्रिड आतंकी संपोलों ने पहलगाम की सुन्दर वादियों को खून से लाल किया है। हाईब्रिड आतंकी वे पाकिस्तानी घुसपैठिए हैं, जो छुप कर कम समय में आतंक फैलाने की ट्रेनिंग लेते है। दिन में यह सामान्य लोगों की तरह ही आस-पास के लोगों से मेल-मिलाप रखते हैं और आतंकी कार्यवाही करने के समय अपने चेहरे पर मास्क लगाकर कम समय में ली गई ट्रेनिंग से वारदात को अंजाम देकर पुनः अपने सामान्य काम में लग जाते हैं। यह अच्छे पढ़े-लिखे और व्यवहार में सम्मानीय नागरिक जैसे होते हैं किंतु अंदर से कुछ और ही रहते हैं।

धारा 370 हटने के बाद कश्मीर की सुंदर वादियों में अत्यधिक भारतीय पर्यटकों का आना और कश्मीर की आर्थिक व्यवस्था सुधरना निश्चित ही पाकिस्तान एवं कश्मीर के कुछेक स्थानीय लोगों को रास नहीं आया। जो कश्मीर धीरे-धीरे गरीबी और हिंसा से मुक्त हो रहा था, जिस कश्मीर की खूबसूरती दिनों-दिन पर्यटकों से बे रही थी, जिससे कश्मीर समृद्ध हो रहा था, उसी धरती के स्वर्ग को पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा ईश्यावश, हिंसा के दलदल में झोंक दिया गया है। पहलगाम की घटना पूरी योजनाबद्ध

तरीके से बनाई गई। सिर्फ हिन्दू समुदाय को ही निशाना बनाया गया, धर्म पूछ-पूछ कर दिन दहो गोली मारी गई है। किसी से कलमा पढ़वाया गया तो किसी से नमाज, किसी की पेंट खोली गई। अब आतंक की पराकाष्ठा हो गई है।

चारों ओर हरियाली, तरह-तरह की खुशबू वाले फूलों से सजी धरती, विभिन्न प्रकार के फल और केसर वाली जमीं, भारत का स्वर्ग कहा जाने वाला कश्मीर है। कश्मीर में ठंढे-ठंढे पानी की लहर बहनी चाहिए न कि दरिंदगी से मारे गए मासूमों का खून। अब पाकिस्तानी सर्प रूपी आतंकवादी को दूध-पानी नहीं पिलाना बल्कि आतंक के फन को कुचल देने की आवश्यकता है।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

पहलगाम घटना में सोशल मीडिया की भूमिका और देश पर असर

हाल ही में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में एक ऐसा हादसा हुआ जिसने पूरे देश का ध्यान खींचा। कुछ पर्यटक वहाँ छुट्टियाँ मनाने गए थे, लेकिन उनके साथ कुछ ऐसा हुआ जिसने सबको हैरान कर दिया। उन्होंने बताया कि उनके साथ गलत व्यवहार हुआ, जिससे उन्हें डर लगा। ये बात तब सामने आई जब उन्होंने अपने अनुभव सोशल मीडिया पर शेयर किए।

सोशल मीडिया ने कैसे खबर फैलाई?

पहलगाम जैसी जगह जहाँ कोई न्यूज चैनल जल्दी नहीं पहुँच पाता, वहाँ से कुछ वीडियो और पोस्ट सोशल मीडिया पर डाले गए। इनमें लोग डरते हुए दिखे, कुछ ने कहा कि उनसे बदतमीजी की गई। ये पोस्ट जैसे ही इंटरनेट पर आए, बहुत तेजी से पूरे देश में फैल गए। ट्विटर, इंस्टाग्राम, फेसबुक और व्हाट्सऐप पर हर जगह इस बारे में बातें होने लगीं। पहला असर यही हुआ कि इस खबर का बहुत तेजी से सबको पता चला। पहले जहाँ ऐसी घटनाएँ एक-दो दिन बाद न्यूज में आती थीं, अब सोशल मीडिया ने उसे कुछ ही घंटों में देश भर में पहुँचा दिया।

आम लोग अपनी बात कह पाए - सोशल मीडिया की सबसे बड़ी ताकत ये है कि आम लोग भी अपनी बात सबके सामने रख सकते हैं। पहलगाम की घटना में भी यही हुआ। वहाँ मौजूद लोगों ने अपनी कहानी खुद सुनाई बिना किसी रिपोर्टर के। इससे बाकी लोगों को असली सच्चाई पता चली और उन्हें भरोसा भी हुआ। लोगों ने इन वीडियो को खूब शेयर किया, जिससे सरकार और पुलिस पर भी दबाव पड़ा कि वे जल्द से जल्द कार्रवाई करें। पर कुछ गलत बातें भी फैल गईं। जहाँ एक तरफ सोशल मीडिया ने सच्चाई सामने लाई, वहीं कुछ लोगों ने गलत जानकारी भी फैलाई। कुछ पुराने वीडियो इस घटना से जोड़कर डाल दिए गए, जिससे लोगों में डर और गुस्सा और बढ़ गया। कई लोग बिना सोच-समझे पोस्ट शेयर करने लगे। इससे कई बेगुनाह लोगों की बदनामी भी हुई। ये हमें सिखाता है कि सोशल मीडिया पर हर बात पर भरोसा नहीं करना चाहिए। किसी भी वीडियो या खबर को शेयर करने से पहले उसकी सच्चाई जरूर जाँचनी चाहिए।

देश भर में भावनात्मक असर - इस घटना का असर पूरे देश पर पड़ा। लोग गुस्से में थे, कई लोगों ने कहा कि अब वे कश्मीर घूमने नहीं जाएँगे। इससे कश्मीर के टूरिज्म पर भी असर पड़ा। होटल बुकिंग्स कैंसिल हुई, और वहाँ के छोटे दुकानदारों को नुकसान हुआ। लेकिन अच्छी बात ये रही कि बहुत से कश्मीरी लोगों ने भी सोशल मीडिया पर सामने आकर कहा कि पूरी घाटी को दोषी न ठहराया जाए। उन्होंने माफी मांगी और देशवासियों से शांति बनाए रखने की अपील की।

सरकार की तेजी से प्रतिक्रिया - सोशल मीडिया के जरिए जब बात बहुत फैल गई, तब पुलिस और प्रशासन ने तुरंत कदम उठाए। वीडियो की जांच हुई, बयान जारी किए गए और लोगों को भरोसा दिलाया गया कि दोषियों को सजा मिलेगी। कश्मीर टूरिज्म विभाग ने भी वीडियो बनाए और लोगों को बताया कि कश्मीर अब भी एक सुरक्षित जगह है।

हम सबकी जिम्मेदारी - सोशल मीडिया आज की जिंदगी का हिस्सा बन चुका है। इससे अच्छी बातें भी फैलती हैं और अफवाहें भी। इसलिए हमारी जिमेदारी बनती है कि हम इसका सही इस्तेमाल करें। हमें किसी वीडियो को शेयर करने से पहले सोचना चाहिए कि उसका असर क्या होगा। अगर हम सभी समझदारी से सोशल मीडिया का इस्तेमाल करेंगे, तो ये देश के लिए बहुत फायदेमंद हो सकता है।

निष्कर्ष - पहलगाम की घटना ने हमें ये सिखाया कि सोशल मीडिया में बहुत ताकत है। इससे कोई भी खबर बहुत तेजी से फैल सकती है। ये आम लोगों को अपनी बात रखने का मौका देता है और सरकार को भी सतर्क रखता है। लेकिन अगर हम इसे बिना सोच-समझ के इस्तेमाल करें, तो ये गलतफहमी और तनाव भी फैला सकता है। इसलिए जरूरी है कि हम सब मिलकर सोशल मीडिया को जिमेदारी और समझदारी से इस्तेमाल करें तभी देश सुरक्षित और मजबूत रहेगा।

इस्लाम प्रायोजित हमले पर देश एकजुट

दुर्गेश कुमार साध

दिनांक 22 अप्रैल 2025 को उस समय पूरा देश स्तब्ध हो गया, जब पता चला कि जम्मू-कश्मीर राज्य के पहलगाम में आतंकवादी घटना हो गई है, जिसमें केवल हिन्दू पर्यटकों (गैर मुस्लिम) को चुन-चुन कर निशाना बनाया गया। यह घटना पूर्व की अनेक आतंकवादी घटनाओं से इसलिए भी अलग थी, क्योंकि आतंकवादियों ने सम्भवतः पहली बार लोगों का **'धर्म'** पूछकर गोली मारी। पर्यटकों से उनका नाम और धर्म पूछा गया, किसी से कलमा पढ़ने को कहा गया, यहाँ तक कि उनकी पैंट खुलवा कर इस बात की तस्दीक की गई कि वे हिन्दू हैं या मुस्लिम। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों को अलग-अलग पंक्तियों में खड़ा करवाया और मुसलमानों को छोड़ कर केवल हिन्दुओं की हत्या की। इससे दो बातें स्पष्ट हुई -

1) आतंकवाद का मज़हब होता है और

2) यह एक पाकिस्तान एवं इस्लाम-प्रायोजित हमला था।

इस हमले की देश भर में तीखी आलोचना हुई। देश के प्रत्येक प्रांत से समवेत स्वर में विरोध के स्वर गूंजे। सोशल मीडिया पर लोगों की भावनाओं के ज्वार विभिन्न तरीकों से उठे और अभी भी उठ रहे हैं। कुछेक अराष्ट्रवादियों को छोड़ दिया जाए, तो सभी इस घटना से सिहर उठे और विरोध ही दर्ज कराया। देश के मुस्लिम बहुल इलाक़ों से भी सभी ने इस घटना की निंदा की। मुस्लिमों द्वारा भी बहुत से स्थानों पर पाकिस्तान का झंडा जलाया गया, तो कहीं पर कैंडल मार्च निकाला गया। मुस्लिम नेताओं और इस्लामिक जानकारों ने इसे अमानवीय करार देते हुए मज़हब के नाम पर इसे समर्थन नहीं दिया, बल्कि उसकी भर्त्सना ही की। जमीयत उलेमा-ए-हिंद के हज़रत मौलाना सैयद अरशद मदनी ने इसे कायरतापूर्ण हरकत बताया और कहा कि **ऐसी चीज़ों का विरोध करना प्रत्येक मुसलमान की नैतिक जिम्मेदारी है।** उन्होंने यह भी कहा कि **वे हर कदम पर सरकार के साथ हैं।** वहीं असदुद्दीन ओवैसी ने कहा कि **पाकिस्तान में जो लोग इस्लाम के नाम पर बकवास करते हैं, वे इस्लाम को नहीं जानते।** एक ओर देश का आम मुस्लिम समाज देश के साथ खड़ा है, वहीं दूसरी ओर इस हमले में स्थानीय मुस्लिमों द्वारा उन आतंकवादियों की सहायता करने की बातें भी पता चल रही हैं, क्योंकि इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि इतनी बड़ी आतंकवादी वारदात को बिना किसी स्थानीय मदद के अंजाम दिया जा सके।

घटना के बाद पूरा विपक्ष और सभी पार्टियाँ एक साथ भारत सरकार के साथ खड़ी हैं और इस बात का समर्थन करती हैं कि इसकी निष्पक्ष जाँच कर दोषियों के विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई की जाए। इस समय आवश्यकता और अपेक्षा दोनों हैं कि ऐसी कायराना हरकत पर पूरा देश एवं समाज एकजुट हो। इस घटना के बाद सभी मित्र देशों (अमेरिका, अरब, रूस, यूके, इज़राइल) ने इस हमले की निंदा की और भारत सरकार को हर सम्भव मदद देने

की पेशकश की है। यह भारत सरकार की दूरदर्शिता का परिणाम ही है कि आज समूचा विश्व भारत के साथ खड़ा है और अपना समर्थन दे रहा है, इसका परिणाम यह होगा कि आने वाले समय में इस्लामिक आतंकवाद की जड़ों पर प्रहार होगा और धीरे-धीरे इसका खात्मा किया जा सकेगा।

जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हट चुकी थी, वहाँ की फिज़ां धीरे-धीरे बदल रही थी, भारत सरकार द्वारा विकास की कई परियोजनाएँ आकार ले रही थीं, लोगों को रोज़गार प्राप्त हो रहा था, पर्यटकों की आवा-जाही बढ़ रही थी और कश्मीर की अर्थव्यवस्था पटरी पर आ रही थी, सम्भवतः इन्हीं बातों से घबरा कर यह पाक एवं इस्लाम-प्रायोजित हमला किया गया। दूसरी ओर हमें देश में पनप रहे इस्लामिक आतंकवादियों की नई पौध पर भी ध्यान देगा होगा और उन पर भी जो कि **छद्म सेकुलरिज्म** के नाम पर देश-विरोधी गतिविधियाँ एवं नैरेटिव गढ़ रहे हैं।

आखिर ऑपरेशन - सिंदूर ही क्यों ?

क्या थी ऑपरेशन सिंदूर की वजह

जीत गोखले

जैसा कि हम सभी जानते हैं हाल ही में भारत के पहलगाम में एक दिल दहलाने वाले हादसे ने अंजाम लिया था। जम्मू-कश्मीर के बेहद सुंदर पहलगाम के बैसरन घाटी में 22 अप्रैल 2025 को कुछ आतंकियों द्वारा वहां गए पर्यटकों पर अंधाधुंध फायरिंग की गई, जिसमें करीबन 26 पर्यटकों की मौत हो गई और साथ ही 16 लोग घायल हुए थे। इस टेररिस्ट अटैक का एक अलग ही पैटर्न था, आतंकियों ने किसी भी महिला या बच्चे को टारगेट न करते हुए सिर्फ पुरुषों को अपना निशाना बनाया और खास बात यह थी कि वहां प्रत्येक व्यक्ति से उसका धर्म पूछा गया, और कई अन्य तरीकों से उसकी पुष्टि भी की गई, उनसे कई चीजें पूछी गई और आखिर तसल्ली के लिए उनके कपड़े उतरवा कर पता किया गया। इन सभी गतिविधियों का सीधा निशाना हिन्दू लोगों पर किया गया था, आतंकी सिर्फ और सिर्फ हिन्दू लोगों को ही गोली दागने आए थे। उनकी मंशा साफ दिखाई दे रही थी कि वो किस तरह एक धर्म की पहचान करने की कोशिश कर उन्हें खत्म करते जा रहे थे। आतंकियों द्वारा महिलाओं को और बच्चों को छोड़कर उन्हें कई तरह के संदेश भी दिए गए जो उन्हें देश के प्रधानमंत्री एवं नेतृत्व करने वालों तक पहुँचाने के लिए कहा गया।

क्या सोचा था और क्या हो गया- इस हादसे के बाद पूरे देश में एक अलग ही आक्रोश नजर आ रहा था, और साथ ही देश के नेतृत्व करने वाले भी इस हादसे को लेकर अपनी मंशा सामने ला चुके थे। मॉक-ड्रिल्स और वॉर की सूचनाएं हम तक मीडिया एवं सोशल मीडिया द्वारा कई दिनों से आ रही थीं, और प्रत्येक भारतीय चाहता था एक बदला। एक ठोस जवाब के आसार नज़र तो आ रहे थे, लेकिन कब दिया जाएगा इसकी कोई खास जानकारी प्राप्त नहीं हुई थी। पिछले कुछ वक्त में देश वासियों को एक छोटी सा आश्वासन दिया गया था कि हम चुप नहीं बैठेंगे, लेकिन किसी को भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि 7 मई को तैयार हो रहा है एक मुँहतोड़ जवाब। जी हां यह जवाब था ऑपरेशन सिंदूर!

ऑपरेशन सिंदूर ही क्यों?

अब बात की जाए इस ऑपरेशन का नाम सिंदूर ही क्यों रखा गया। तो जैसा कि हम बता चुके हैं आतंकी हमले में सिर्फ और सिर्फ हिन्दू पुरुषों को निशाना बनाया गया और हमारे देश की माँओं, बहनों, बेटियों का सिंदूर उजाड़ा गया, किसी से उसका बेटा तो किसी से उसका पिता छीन लिया गया और उन्हीं देशवासियों की आंखों का आक्रोश था - **ऑपरेशन सिंदूर**।

वैसे देखा जाए नाम ऑपरेशन सिंदूर रखा गया और इस ऑपरेशन को अंजाम भी भगवान श्री हनुमान के दिन मंगलवार को दिया गया। भारतवासियों का यह बात जानकर सीना और

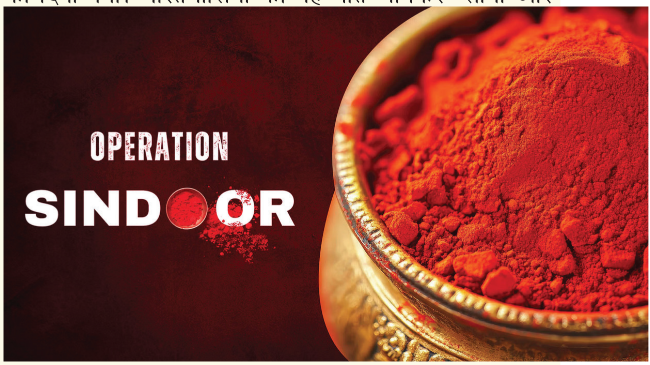

गर्व से ऊँचा हो जाएगा जब वह जानेंगे कि इस ऑपरेशन सिंदूर या हमारे देश की नारियों के बदले का नेतृत्व कर रही थीं कर्नल **सोफिया कुरैशी** और विंग कमांडर **व्योमिका सिंह**। भारत देश की 2 बेटियों ने 07 मई 2025 मध्य रात्रि को किए गए इस ऑपरेशन में पाकिस्तान एवं PoK में स्थित 9 आतंकी अड्डों को ध्वस्त किया गया। जानकारी के अनुसार लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिज्बुल मुजाहिदीन के मुख्य अड्डों पर निशाना साध एयर स्ट्राइक की गई। बताया जा रहा है यह एयर स्ट्राइक सिर्फ और सिर्फ आतंकवाद के विरुद्ध थी, इसका और किसी रूप से गठन नहीं किया गया था। लेकिन यह साफ-साफ जाहिर किया गया है कि जो हमारे देश पर या हमारे देश की जनता को हानि पहुँचाना चाहते हैं यह **ऑपरेशन सिंदूर** उसका एक छोटा सा नज़ारा है। इस ऑपरेशन के बाद आने वाले कई इरादों की पहले से ही चेतावनी दी जा चुकी है कि एक रात में कितनी चीजें बदली जा सकती हैं ताकि आने वाले वक्त में हमारे देश पर किसी की भी नजर न पड़े। और जो हुआ है उसका मुँहतोड़ जवाब दिया गया है और आगे भी दिया जाएगा।

सिंदूर स्ट्राइक: भारतीय प्रतिरोध का नया सिद्धांत

अरुंधति सिंह चंदेल

जब देश शांति से सो रहा था, भारतीय रक्षा बलों ने एक योजनाबद्ध वायु हमले का संचालन किया, जिसमें उन व्यक्तियों के ठिकानों को निशाना बनाया गया था जो भारत के खिलाफ आतंकवादी घटनाओं में शामिल थे। ये हमले, पहलगाम नरसंहार के लिए न्याय प्रदान करने के लिए थे– यह एक स्पष्ट संदेश था कि भारत अपनी संप्रभुता के खिलाफ हुए अपराधों को न तो माफ करेगा और न ही भूलेगा। 22 अप्रैल 2025 की सुबह, जो कश्मीर घाटी में एक शांतिपूर्ण वसंत दिवस होने वाली थी, वह रक्तपात में बदल गई। 26 निर्दोष नागरिक–मुख्यतः हिंदू तीर्थयात्री–पहलगाम में **द रेसिस्टेंस फ्रंट** के आतंकवादियों द्वारा नरसंहार का शिकार हो गए, जो लश्कर-ए-ताइबा का एक प्रॉक्सी था। महिलाओं और बच्चों को छोड़ दिया गया, लेकिन पुरुषों को इस्लामिक आयतें पढ़ने का आदेश दिया गया–जो नहीं बोल पाए, उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया। 7 मई 2025 को ठीक 03.40 बजे भारतीय वायु सेना ने ऑपरेशन सिंदूर की शुरुआत की–जिसे भारतीय परंपरा में पवित्रता और प्रतिशोध के प्रतीक सिंदूर से नामित किया गया। केवल 23 मिनट में, भारत के लड़ाकू विमानों ने आकाश में प्रवेश किया और नौ आतंकवादी ठिकानों पर लक्षित हमले किए, जिनमें शामिल थे;

बहावलपुर - जैश-ए-मोहम्मद का मुख्यालय,
मुरीदके - लश्कर-ए-तैयबा की वैचारिक नर्सरी,
मुजफ्फराबाद, कोटली और सियालकोट - सीमा पार घुसपैठ के लॉन्चपैड

ये हमले राफेल लड़ाकू विमानों द्वारा किए गए थे, जो SCALP मिसाइलों और AASM हैमर बमों से लैस थे। इनमें 70 से अधिक आतंकवादी नष्ट कर दिए गए। अमेरिका, फ्रांस और इजरायल ने चुपचाप भारत की कार्रवाइयों का समर्थन किया। चीन ने संयम की अपील की, लेकिन पाकिस्तान का सीधे समर्थन करने से बचा–जो पिछले गठबंधनों से एक बदलाव था। ऑपरेशन सिंदूर केवल सेना का एक कदम है–यह भारत की जागृत इच्छा की घोषणा थी। इसका मतलब था कि लोकतंत्र का ताज महान है, लेकिन जब लोग लहूलुहान होते हैं तो उसे तलवार से कतराना नहीं चाहिए। ऑपरेशन का एक महत्वपूर्ण सत्य यह भी है कि कानूनी सतर्कता, आर्थिक दृष्टि और नागरिक एकता को रणनीतिक शक्ति के साथ में चलना चाहिए। और सिंदूर की लाल आग में, भारत ने यह सिद्ध कर दिया है कि यह सिर्फ संतों और साधकों का देश नहीं है– बल्कि प्रहरी भी है। यह केवल प्रतिशोध का कार्य नहीं था, बल्कि यह भारत के अस्तित्व का अधिकार, शोक करने का अधिकार और बिना खेद के रक्षा करने का अधिकार था।

इसने भारत में प्रतिरोध के सिद्धांत को फिर से परिभाषित किया– जिस सिंदूर का इसने आह्वान किया, वह युद्ध का नहीं, बल्कि गरिमा, न्याय और राष्ट्रीय संकल्प का था। भारत, साधुओं और साधकों की भूमि ने दुनिया को याद दिलाया कि यह प्रहरी की भूमि भी है।

ऑपरेशन सिंदूर से सिंधु तक भारत की कार्रवाई

- सिंधु जल समझोता पहली बार समाप्त,पाक प्यासा मर रहा हैं।
- 4 दिन 40 पाक सैनिक मारे।
- 9 आतंकी कैम्प तबाह किए।
- चीन निर्मित HQ-9 डिफेंस सिस्टम को तबाह किया।
- 3 फाइटर जेड को तबाह किया।
- 100 से ज्यादा आतंकी मार गिराए।
- 6 महत्वपूर्ण एयरबेस पाक के बर्बाद किए।
- ड्रोन अटैक 100% सफल।
- चीन, तुर्की निर्मित ड्रोन को बर्बाद किया।
- 1965 की लड़ाई 49 दिन, 1971 की लड़ाई 13 दिन, 1999 करगिल युद्ध 85 दिन चला। जिसमें पाक के 9 आतंकी ठिकाने,11 सैन्य ठिकाने नष्ट किए थे, उससे कई गुना कार्य हमारी सेना ने मात्र 4 दिन में कर दिया।
- पाक के पंजाब में 1971 के बाद पहला हमला ।
- पाक ने पहली बार चीनी जेड उतारे जिन्हें भारतीय सेना ने बर्बाद कर दिया।
- कंधार विमान हाईजैक का बदला लिया।
- कई पाकिस्तानी ड्रोन के परखच्चे उड़ाए।
- सीमा पर आतंकियों और घुसपैठियों को मार गिराया।
- 21वी सदी में पहली बार भारतीय सेना ने पाक में 500 किलोमीटर अंदर तक एयर स्ट्राइक की।

कश्मीर में धर्म पूछकर हत्या
जिहादी मानसिकता का षड्यंत्र

श्री गोपाल सोनी, उज्जैन

भारतीय राष्ट्र को विखंडित करने वाली धारा 370 को हटाने के बाद से कश्मीर में सब कुछ सही चल रहा था। भारत ही नहीं बल्कि विदेशों के सैलानी भी धीरे-धीरे यहां की खूबसूरत वादियों में घूमने आ रहे थे। सैलानियों के आने से वहां के नागरिकों की आय में भी वृद्धि हो रही थी। कश्मीर में खुशहाली का खूबसूरत माहौल बन ही रहा था। किन्तु देश के माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा वहां लोकतंत्र की बहाली के लिए केंद्र सरकार पर लगातार दबाव बनाया जा रहा था। इसी दबाव में सरकार ने वहां चुनाव सम्पन्न करवाए और एक सरकार निर्मित हुई। इसके बाद पड़ौसी को एक अवसर मिल गया कि वह अपने यहां के जिहादियों को भारत में पुनः आतंक फैलाने के लिए भेजे और दुनिया को कश्मीर के मामले पर सक्रिय करे। कुछ सोशल मीडिया वीडियो में तो यह भी बताया जा रहा है कि इस तरह के आतंकी-जिहादी मामलों में उन्हें वहां के स्थानीय राजनयिकों और नौकरशाहों का भरपूर समर्थन मिल रहा था। जिहादी संगठनों को यह बिल्कुल नागवार था कि भारतीय और विश्व के सैलानी कश्मीर की खूबसूरत वादियों में आनंद के पल लेने जाएं। कश्मीर में माहौल को बिगाड़ने के लिए विचारपूर्वक आतंकी हमला करवाया गया। हमले को वीभत्स और क्रूर तरीके से अंजाम दिया गया, ताकि पूरे भारत की जनता में इस घटना को लेकर आक्रोश पैदा हो। दुनिया में कश्मीर के मिनी स्विट्ज़रलैण्ड कहलाने वाले पहलगाम में 22 अप्रैल को भरी दोपहर में जिहादी-आतंकियों द्वारा इस क्रुर घटना को अंजाम दिया गया। इसमें घूमते और आनंद करते हुए लोगों से उनके नाम पूछे गए और अगले ही क्षण सिर पर गोली मार दी गई। जो स्वयं को मुस्लिम बताता उससे कलमा पढ़वाकर उसका धर्म और तब भी संशय होने पर उनके कपड़े उतरवाकर उनके गुप्तांगों की बनावट को देखकर उन्हें उनकी पत्नी और बच्चों के सामने गोलियों से भून दिया गया। पति की मौत के बाद एक महिला ने आतंकी से बोला कि उसे भी मार दिया जाए तो जिहादी आतंकी द्वारा उसे यह कहकर कि **नहीं मारेंगे, जाओ और मोदी को बताओ।** सरकारी रिपोर्ट के अनुसार जिस स्थान पर यह घटना घटित हुई है उसे जून में खोला जाना निर्धारित हुआ था किंतु बीच समय में इस जगह को खोल दिया गया। यहाँ पर पहुंचने वाले अनेक सैलानियों ने खच्चर वालों को आगे न ले जाने का अनुरोध भी किया था किंतु वह उनकी बात सुने बिना भी उन्हें आगे ले गए, कुछ ने तो पूरे पैसे देने की बात भी कही किंतु यह लोग नहीं माने ओर उन्हें ले गए। जब वहाँ पर लोगों को मारा जा रहा था तब तीन पुलिसकर्मी भी उपस्थित थे जिन्होंने कोई बचाव नहीं किया। इसके बाद इन खच्चरवालों और पुलिसवालों की भूमिका भी संदिग्ध नजर आ रही है।

यह हमला ऐसे वक्त किया गया जब अमेरिका के उपराष्ट्रपति भारत के दौरे पर थे और भारत के प्रधानमंत्री विदेश की यात्रा पर थे। हमले के बाद देश के गृहमंत्री को तुरंत कश्मीर आना पड़ा और भारत के प्रधानमंत्री भी अपना दौरा बीच में रद्द कर भारत लौट आए। देश की जनता में इस घटना के बाद बहुत ही गुस्से का माहौल बन गया और सारे देश की जनता की यही मांग है कि पड़ौसी देश पाकिस्तान और आतंकियों को इसकी ऐसी सजा दी जाए जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की हो। इस दिशा में प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए कड़े फैसले लिए जिसके तहत पाकिस्तान को भारत की ओर से जाने वाले सिंधु नदी के जल को रोकना, अटारी बॉर्डर को बंद करना, पाकिस्तान के साथ व्यापार पूरी तरह से बंद करना और पाकिस्तानी नागरिकों के वीजा रद्द कर उन्हें वापस पाकिस्तान जाने का आदेश दे दिया गया।

भारत सरकार के इन कड़े फैसलों के बाद से पाकिस्तान की मुश्किलें पूरी तरीके से बढ़ने लगी हैं क्योंकि भारत की सिंधु नदी और उसमें शामिल होने वाली सहायक नदियों का जल पाकिस्तान के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस जल से पाकिस्तान की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है और कई इलाकों में पाकिस्तान के लोगों की प्यास को भी बुझाया जाता है, परन्तु जब भारत की ओर से पानी देना बंद होने पर पाकिस्तान बहुत ही मुश्किलों में फंस जाएगा।

कश्मीर में जो घटना हुई है उससे यह साबित होता है कि कश्मीर में पूरी तरीके से आतंक का खात्मा नहीं हुआ है। वहां के लोग आज भी पाकिस्तानपरस्त सोच को अपना कर चल रहे हैं। इस घटना के बाद पर्यटकों का कश्मीर आना बंद हो जायेगा यह सोचकर वहां के कुछ व्यापारी लोगों ने विरोध प्रदर्शन तो किया किंतु

उनके चेहरे पर दुःख जरा भी दिखाई नहीं दे रहा था, बल्कि जो वीडियो प्रसारित हुए उनमें से कई में साफ तौर पर देखा जा सकता है कि उनके चेहरों पर मुस्कान दिख रही है। भारत की मेन स्ट्रीम मीडिया के द्वारा जब वहां के कुछ इलाकों में जाकर लोगों से इस घटना पर चर्चा की गई तो वहां के कई लोगों के द्वारा इस प्रकार से बयान दिये गये कि जैसे लगता है कि मानों उन्हें इस घटना से बहुत खुशी मिली हो। कई इलाकों में पत्रकारों के साथ धक्का-मुक्की और बदतमीजी भी की गई। वहां पर रहने वाले कई लोगों के घर अंदर से इस प्रकार बने हुए हैं कि वे आराम से आतंकियों को अपने घरों में शरण देते हैं और सेना के ऑपरेशन से उन्हें बचाते हैं। वहां के रहवासियों के घरों के पास ही जमीन के अंदर कुछ ऐसे चेंबर बने पाए गए हैं जो किसी भी प्रकार के नाले में जाकर नहीं मिलते हैं। उनको इसलिए बनाया गया है कि जिहादी-आतंकी वहां पर छुपकर अपनी जान बचाएं और निर्दोष लोगों की हत्या करें। अब अगर गौर किया जाए तो ये चेंबर क्या वहां के रहवासियों की बिना सूचना और जानकारी के बनाए जा सकते हैं?

भारत में कई स्थानों पर पाकिस्तान के विरूद्ध तरह-तरह से विरोध प्रदर्शन किये जा रहे हैं। सड़कों पर पाकिस्तान का झण्डा लगाकर, पाकिस्तान मुर्दाबाद का नारा लिखकर विरोध किया गया तो बहुत से भारत में रह रहे पाकिस्ताननिष्ठ लोगों के चेहरे सामने आ गये। कुछ लोग उस झण्डे और नारे पर पैर रखकर चलने को तैयार नहीं थे तो कुछ लोग सड़क पर पड़े हुए पाकिस्तानी झण्डे को उठाकर उसे अपने साथ ले गये। लोगों के द्वारा जब इस बात का विरोध किया गया तो उनसे पाकिस्तान के पक्ष में बहस करने लग गये। तो कहीं पहलगाम आतंकी हमले की मोबाइल पर रील देखने वाले युवक को भारत के पाकिस्तान-प्रेमियों के द्वारा मारपीट कर डराया धमकाया गया तो किसी को रास्ते में रोककर उसका धर्म पूछकर यह धमकी दी गई कि अगला नंबर तेरा होगा, ऐसी अनेक घटनाएं भी इनमें शामिल हैं।

भारत में होने वाली आतंकी घटनाओं के अंजाम तो वे जिहादी-आतंकी देते हैं जिन्हें पाकिस्तान के द्वारा पोषित किया जाता है परन्तु इनको आश्रय हमारे ही देश के गद्दारों के द्वारा दिया जाता है और इनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है। यहां तक की जरूरत पड़ने पर खुले तौर पर इनके बचाव में भी सामने आ जाते हैं। वर्तमान हमले के बाद भारत के कई बड़े राजनैतिक ओर वियात लोगों द्वारा पाकिस्तान के समर्थन में बयान दिए जा चुके हैं। दरअसल भारत के लिए अपने पड़ौसी देश से निपटना है उतनी ही जरूरत भारत के अंदर रह रहे लोगों से निपटने की भी है।

भारत का स्वर्ग

डॉ. शोभा ओम प्रजापति, इन्दौर

कश्मीर की घाटियाँ हैं ये भारत का स्वर्ग
अवश्य ही यह देख ले दुनिया का हर वर्ग

यह तो है हमारे भारत देश की शान
रहेगा हमें इस पर हर पल अभिमान

आतंकी तांडव चाहे कितना भी मचा लें
दुश्मन देश कुकर्मी को भले ही बचा लें

लेकिन हम भारतीय हमारा ही है कश्मीर
पहलगाम की घटना से समझी यह पीर

एक पल में वह स्थान हुआ भयाक्रांत सहरा-सा
हां ! हुआ है जन-जीवन अभी ठहरा-सा

हमें देश के गद्दारों पर रखना ही होगा पहरा
नहीं तो हमारे ही सीने में छेद करेंगे गहरा

नहीं स्वीकार अब इनका कैसा भी गिड़गिड़ाना
अभी कड़ी सजा नहीं दी तो फिर से होगा पछताना

हमारी बेकसूर बहनों ने जो पिया है खून का घूंट
हे भारत वीरो! जागो कहीं दुश्मन न जाये छूट

छली-कपटी और मौकापरस्त
पर अब न दया दिखाना
रहो सावधान फिर किसी
वीर सपूत को न गँवाना

आततायी चाहे कितना भी दम भरे
वह हारता ही रहेगा
है अटल सत्य कि कश्मीर
भारत का स्वर्ग था, है, रहेगा।।

यातायात पुलिस चौकी
राजवाड़ा
आतंकवाद का
कोई मजहब
नहीं होता
लेकिन नाम
पूछ के गोली
मार देते है।

जून माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 05 गंगा दशहरा
ता. 09 बिरसा मुण्डा शहीदी दिवस
ता. 14 विश्व रक्तदान दिवस
ता. 18 रानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस
ता. 26 अंतर्राष्ट्रीय नशा एवं सगीत दिवस
ता. 27 भगवान जगन्नाथ रथयात्रा

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341